ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 98-101

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

"उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल में जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक–कालिक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सूरत सिंह बलूड़ी

एसो0 प्रो0– भूगोल विभाग, श0दु0म0राज0स्ना0 महाविद्यालय, डोईवाला–देहरादून (उत्तराखण्ड), भारत

Received- 24.08.2020, Revised- 28.08.2020, Accepted - 03.09.2020 E-mail: - rksharpur2@gmail.com

सारांश : ***जनसंख्या वृद्धि जनसंख्या की एक स्वाभाविक विशेषता है। इस वृद्धि का विश्लेषण भूकालिक, ग्रामीण, नगरीय, धार्मिक, प्रादेशिक आयु व लैंगिक, कार्यशील/अकार्यशील, शिक्षित/अशिक्षित आदि पक्षों के सन्दर्भ में किया जाता है। जनसंख्या की वृद्धि वितरण एवं घनत्व भौगोलिक एवं सांस्कृतिक आर्थिक तत्वों का परिणाम है। तथा जनसंख्या वृद्धि के लिए प्रजनन, मृत्यु एवं प्रवसन का प्रमुख कारक है। प्रस्तुत शोध–पत्र में टिहरी गढ़वाल के जनसंख्या घनत्व एवं वृद्धि दोनों में ही 1951 से 2011 के मध्य लगातार वृद्धि हुई है। जनसंख्या समूह में स्थानिक एवं कालिक परिवर्तन ही जनसंख्या वृद्धि कहलाती है– क्लार्क, 1972***

कुंजीभूत शब्द– स्वाभाविक, भूकालिक, ग्रामीण, नगरीय, धार्मिक, प्रादेशिक, लैंगिक, कार्यशील, भौगोलिक ।

भूमिका– किसी भी देश की जनसंख्या या मानव संसाधन उसकी सबसे बड़ी पूंजी होती है। जनसंख्या के उपयुक्त आकार और श्रेष्ठ गुणात्मक विशेषताओं के आधार पर ही किसी भी देश का विकास निर्भर करता है। भारती एवं त्रिपाठी, 2009 किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या के वितरण एवं स्वभाव का जानने के लिए उस क्षेत्र की भौगोलिक विषेशताओं पर दृष्टिपात करना आवश्यक है जिसका सीधा प्रभाव मानव की संस्कृति पर पड़ता है। मानव ही क्षेत्रीय संसाधनों का विदोहक, उत्पादक, उपभोक्ता एवं नियोजक है। जिससे उस क्षेत्र या प्रदेश का आर्थिक विकास का मार्ग बनता है।

जनसंख्या विश्लेषण में जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन महत्वपूर्ण होता है इसके द्वारा किसी भी क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक एवं साँस्कृतिक परिवेश को समझने में मदद मिलती है। वहीं उस क्षेत्र की समस्याओं को समझने एवं निराकरण हेतु बनायी गयी भावी योजनाओं के लिए एक आधार बनती है।

जनसंख्या वृद्धि का प्रत्यक्ष प्रभाव जनसंख्या के विभिन्न आयामों यथा–जनसंख्या वितरण एवं जनघनत्व, प्रवसन, जनांकिकीय, जैवीय तथा सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों पर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। इन तत्वों के द्वारा किसी भी प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित की जा सकती है। जनसंख्या वृद्धि का अभिप्राय किसी भी क्षेत्र में एक निश्चित अवधि के अर्न्तगत जनसंख्या में हुई वृद्धि से कहा जाता है इसमें सामाजिक, आर्थिक एवं भौगोलिक या पर्यावरणीय कारकों के आधार पर लगातार परिवर्तन होता रहता है– चीब 1984

अध्ययन क्षेत्र– जनपद टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्ड राज्य के उत्तर में स्थित एक कृषि प्रधान जिला है। यह जनपद 3003′ से 30043′ उत्तरा अंक्षाश और 77046′ से 7904′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है तथा कुल क्षेत्रफल 3642 वर्ग किलोमीटर है। 2011 जनगणना के अनुसार इसकी कुल जलसंख्या 6,18931 थी।

विधितंन्त्र– प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक विधि–तन्त्र का प्रयोग करते हुए द्वितीयक आंकड़ों का विभिन्न स्रोतों से संग्रह करते हुए उनका विश्लेषण कर जनपद की जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों को समझाने का प्रयास किया गया है। जनसंख्या का विश्लेषण दो हिस्सों, स्थानिक एवं कालिक में बांटा गया है। पहले भाग में जनसंख्या वृद्धि का कालिक विश्लेषण वर्शवार कुल जनसंख्या एवं जनसंख्या वृद्धि के प्रतिशत के आधार पर किया गया है। जबकि द्वितीय भाग में जनपद में जनसंख्या वितरण विकास खण्डवार जनसंख्या एवं जनघनत्व के आधार पर किया गया है जनसंख्या की वृद्धि–दर का आंकलन औसत गणितीय वृद्धि–दर द्वारा किया गया है जिसे गिब्स, जे0पी0 (1966) में निम्नवत सूत्र के साथ में प्रस्तुत किया है। $R = \frac{(P2 \& P1)T \times 100}{(P2 \& P1)2}$

यहां R = वार्षिक वृद्धि दर, P1= आधार वर्ष की जनसंख्या, P2= अन्तिम वर्ष की जनसंख्या,

T= समयान्तराल।

जनसंख्या के स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण हेतु द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। जिनके एकत्रीकरण के जनगणना निदेशालय देहरादून, एवं जिला साँख्यिकी अधिकारी नई टिहरी टि0ग0 तथा सभी विकासखण्डों के कार्यालय से सम्पर्क किया गया है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

जनसंख्या वृद्धि प्रतिरूप– किसी भी भौगोलिक क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि उस क्षेत्र की आर्थिक विकास, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक परिवेश, ऐतिहासिक परिघटनाओं एवं राजनैतिक विचारों की सूचक होती है। जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों में प्राकृतिक, साँस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आवास–प्रवास नीति प्रमुख है। जनपद टिहरी गढ़वाल की जनसंख्या मुख्य रूप से प्रधान खुली घाटियों में एकत्र है। इन क्षेत्रों में मुख्य कारण पर्याप्त मात्रा में कृषि हेतु समतल भूमि उपजाऊ भूमि, जल की उपलब्धता उपयुक्त जलवायु, यातायात के साधनों की पर्याप्तता है। जबकि पर्वतीय भागों में जनसंख्या में कमी में धरातल की बनावट, जलवायु, तापक्रम, जल, सूर्यताप की महत्वपूर्ण भूमिका है। यद्यपि किसी देश के भाग्य निर्धारण में जनसंख्या का महत्वपूर्ण योगदान रहता है, लेकिन मानव अभिवृद्धि एवं विकास का प्रभाव मनुष्य के आर्थिक, सामाजिक, साँस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन पर भी पड़ता है– क्लार्क, 1972

1–जनपद टिहरी गढ़वाल में जनसंख्या वृद्धि 2011

दशक	कुल	ग्रामीण	नगरीय	उत्तराखण्ड
1901	–	–	–	–
1911	11.88	11.88	–	13.36
1921	5.85	5.85	–	–1.23
1931	9.79	9.78	–	8.74
1941	13.67	13.67	–	13.63
1951	3.72	1.3	–	12.67
1961	13.53	13.7	6.24	22.57
1971	14.28	13.74	38.53	24.42
1981	25.25	23.34	95.25	27.45
1991	4.52	2.13	60.1	24.23
2001	16.25	11.82	81.93	19.20
2011	1.92	0.71	17.19	19.17

स्रोत : साँख्यिकीय पत्रिका नई टिहरी, टि0ग0

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की जनसंख्या 1,21,0854977 है, जो विश्व की जनसंख्या का 17.5 प्रतिशत है, जबकि भारत का क्षेत्रफल विश्व में 2.42 प्रतिशत है। उत्तराखण्ड के 1.63 प्रतिशत क्षेत्रफल पर भारत की 0.83 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। टिहरी गढ़वाल के कुल 3642 वर्ग किमी0 क्षेत्रफल पर वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 6,18931 व्यक्ति है जो पिछले दशक (2001 की जनगणना के अनुसार 604747 की तुलना में अधिक है। तालिका 2 से विदित होता है कि वर्ष 1901 में जनपद की जनसंख्या 1,99831 थी जो वर्ष 1911 में बढकर 223569 हो गयी। वर्ष 1901 से 1911 के दशक में जनसंख्या वृद्धि की दर 11.88 प्रतिशत रही 1911–1921 में जनसंख्या वृद्धि की दर 5.85 प्रतिशत रही जो पिछले दशक 6.03 प्रतिशत कम थी इसका मुख्य कारण महामारी, हैजा एवं अन्य संक्रामक रोगों का प्रकाप था। उक्त दशक में स्वास्थ्य सेवाओं का उचित प्रबन्ध न होने के कारण इन महामारियों पर नियन्त्रण नहीं हो सका। 1921–31 के दशक में जनसंख्या 2,59796 हो गयी जो वृद्धि दर थी 9. 78 दर्ज की गयी। 1931–41 के दशक में 2,95321 जनसंख्या हो गयी और वृद्धि दर 13.67 प्रतिशत थी। 1941–51 के दशक में जनसंख्या की वृद्धि 3.72 दर्ज की गयी जो पिछले दशक से 9.95 प्रतिशत कम रही है। जबकि उत्तराखण्ड की जनसंख्या में 12.35 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है। 1951–61 के दशक में जनसंख्या तीव्र वृद्धि के साथ 3,47736 लाख हो गयी जो पिछले दशक की तुलना में 13.53 प्रतिशत हो गयी इस अवधि में उत्तराखण्ड की जनसंख्या में 26.51 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। 1961–71 के दशक में जनसंख्या 3,97385 रही तथा वृद्धि दर 14.28 दर्ज की गयी जबकि इस दौरान उत्तराखण्ड की जनसंख्या वृद्धि दर 23.04 प्रतिशत रही। 1971–81 में जनसंख्या पुनः 4,97710 लाख हो गयी इस दशक में जनसंख्या वृद्धि 25.25 प्रतिशत रही जबकि उत्तराखण्ड में जनसंख्या वृद्धि 26.85 प्रतिशत वृद्धि हुई। 1981–91 के दशक में जनसंख्या बढ़कर 5,20214 हो गयी इस दशक में जनसंख्या वृद्धि 4.52 प्रतिशत रही। इसका मुख्या कारण टिहरी बांध परियोजना से प्रभावित गांवों के लोगों को देहरादून जिले के मैदानी भागों में विस्थापित करना रहा है।

2–जनपद टिहरी गढ़वाल में जनसंख्या वृद्धि अन्तर 2011

वर्ष	सम्पूर्ण जनसंख्या	कुल	ग्रामीण [illegible] प्रतिशत	अन्तर नगरीय
1901	199831	–	–	–
1911	223569	11.88	11.88	–
1921	236641	5.85	5.85	–
1931	259796	9.78	9.78	–
1941	295321	13.67	13.67	–
1951	306306	3.72	1.3	–
1961	347736	13.53	13.7	6.24
1971	397385	14.28	13.74	38.53
1981	497710	25.25	23.34	95.25
1991	520214	4.52	2.13	60.1
2001	604747	16.25	11.82	81.93
2011	618931	2.34	0.71	17.19

स्रोत : साँख्यिकीय पत्रिका नई टिहरी, टि0ग0

1991–2001 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर 16. 25 प्रतिशत रही जबकि 2001–2011 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर 2.34 प्रतिशत रही है। इसका मुख्य कारण इस पर्वतीय भागों से लोगों का पलायन मैदानी या देश के दूसरे शहरों में स्थानान्तरित रहा है। मुख्यतः जनसंख्या वृद्धि के कारण अकाल एवं महामारियों की रोकथाम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की सुविधाओं में वृद्धि साक्षरता की कमी से सामाजिक रीतियों में अन्धविश्वास, परिवार नियोजन कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार न होना, आदि रहा है। वर्ष 2001–2011 के दशक में अध्ययन क्षेत्र के अर्न्तगत विकासखण्ड स्तर पर ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि में भिन्नता पायी गयी। तालिका 3 से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर पता चलता है कि जनपद टिहरी गढ़वाल में विकासखण्ड नरेन्द्रनगर की ग्रामीण

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

जनसंख्या वृद्धि 14.64 प्रतिशत रही है। जबकि थौलधार विकासखण्ड में वृद्धि (−15.50) ऋणात्मक रही है। इसका मुख्य कारण लोगों का शहरी क्षेत्रों में पलायन है।

जनसंख्या का सामान्य वितरण– इस जनपद की भौगोलिक बनावट में अत्यधिक विभिन्नताओं के कारण भी जनसंख्या का असमान वितरण है। एक विकासखण्ड के अर्न्तगत अनेक प्रकार की धरातलीय रचनाएं है। उच्च एवं पहाड़ी भागों पर मानव बसाव बहुत कम है जबकि प्रधान खुली घाटियों पहाड़ी ढलानों में छितरे पुंज के रूप में जनसंख्या मिलती है इन घाटियों, जल उपलब्धता, उपजाऊ भूमि, कृषि कार्य हेतु समतल भूमि, उपयुक्त जलवायु और यातायात के साधनों की पर्याप्तता है। जैसे मुख्य घाटियों से दूर जाते हैं, जनसंख्या विरल होती जाती है।

3–टिहरी गढ़वाल की जनसंख्या वृद्धि 2011

क्र.स.	विकासखण्ड का नाम	व्यक्ति	पुरुष	स्त्री	वृद्धि प्रतिशत में
1.	प्रतापनगर	62618	29834	32784	8.66
2.	पिलंगना	109856	49516	60340	2.5
3.	जाखणीधार	47600	21947	25653	5.11
4.	जौनपुर	72289	36195	36094	13.19
5.	थौलधार	43453	20295	23158	−15.50
6.	चम्बा	83254	41836	41418	−4.86
7.	नरेन्द्रनगर	98475	50462	48013	14.64
8.	देवप्रयाग	53915	25324	28591	−1.97
9.	कीर्तिनगर	47471	22613	24858	3.15
	योग	618931	298022	320905	2.34

स्रोत : सौंख्यिकीय पत्रिका नई टिहरी, टि0ग0

सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक कारण क्षेत्र विशेष की जनसंख्या को प्रभावित करते हैं त्रिपाठी 2008। जनसंख्या वितरण एक गत्यात्मक प्रक्रिया है जो कभी बढ़ती है तो कभी घटती है– क्लार्क 1972 प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग, कृषि उत्पादन, फलोत्पादन, भेड़–बकरी पालन आदि भी जनसंख्या वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करते हैं। अतः जनसंख्या वितरण एक अस्थिर अवस्था है जो क्षेत्र विशेष के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विशेषताओं के पारस्परिक प्रभाव के समय पर परिवर्तित होती रहती है। इस जनपद में जो छोटे–छोटे हिमालय टाऊनसिप बन रहे हैं वहां पर जनसंख्या का वितरण और घनत्व बढ़ रहा है। टिहरी गढ़वाल में वर्ष 2011 क जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 6,18931 व्यक्ति है जो उत्तराखण्ड की जनसंख्या (2011 की जनगणनानुसार 1,0086292 व्यक्ति) का 2.35 प्रतिशत है। जनपद की 61,8931 जनसंख्यार में 54,8792 (88.66 प्रतिशत) ग्रामीण जनसंख्या है। तथा शेष 7,0139 (11.34 प्रतिशत) नगरीय जनसंख्या है। तालिका 4 से विदित होता है कि समस्त विकासखण्डों में ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है, जबकि चम्बा, नरेन्द्रनगर, देवप्रयाग, कीर्तिनगर में नगरीय जनसंख्या अति न्यून है। जनसंख्या के सामान्य वितरण के तहत ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या दोनों को शामिल किया गया है। सामान्य वितरण में सबसे अधिक जनसंख्या भिलंगना में (17.74 प्रतिशत) है। जबकि नरेन्द्रनगर में यह 15.91 प्रतिषत है। जो पर्वतीय पदीय नगर ऋशिकेश के बहुत नजदीक है। अन्य विकासखण्डों में चम्बा से 13.45 प्रतिशत, जौनपुर 11.67 प्रतिशत प्रतापनगर 10.11 प्रतिशत देवप्रयाग 8.71 प्रतिशत जाखणीधार 7.69 प्रतिशत कीर्तिनगर 7.66 प्रतिषत जनसंख्या निवास करती है।

4–टिहरी गढ़वाल में जनसंख्या वर्ष 2011

क्र.स.	विकासखण्ड का नाम	जनसंख्या	प्रतिशत	ग्रामीण जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या
1.	प्रतापनगर	62618	10.11	62618	–
2.	पिलंगना	109856	17.74	109856	–
3.	जाखणीधार	47600	7.69	47600	–
4.	जौनपुर	72289	11.67	72289	–
5.	थौलधार	43453	7.02	43453	–
6.	चम्बा	83254	13.45	51469	31785
7.	नरेन्द्रनगर	98475	15.91	63790	34685
8.	देवप्रयाग	53915	8.71	51763	2152
9.	कीर्तिनगर	47471	7.66	45954	1517
	योग	618931	100	548792	70139

स्रोत : सौंख्यिकीय पत्रिका नई टिहरी, टि0ग0

जनसंख्या घनत्व– किसी प्रदेश में जनसंख्या का घनत्व निश्चित भूमि की एक इकाई भीतर रहने वाली जनसंख्या के मध्य कम अनुपात को स्पष्ट करता है। साथ ही भूमि संसाधन एवं जनसंख्या के मध्य परिवर्तनशील सम्बन्धों को प्रकट करता है। क्षेत्र का आर्थिक विकास की कमी के कारण जनसंख्या घनत्व में कमी का होना भी है। इस प्रकार भूमि–मानव अनुपात का अध्ययन करने पर कई क्षेत्रीय विशेषताएं सामने आ जाती हैं इसका महत्व समान समरूपता क्षेत्रों में आधुनिक सुविधाओं की अपेक्षा यहां का अधिकांश भाग अत्यधिक जटिल होने के साथ ही अगम्य भी है। किसी भी प्रदेश की जनसंख्या घनत्व में भौतिक एवं सांस्कृतिक आर्थिक, सामाजिक तत्व अपना प्रभाव दिखाते हैं। पर्वतीय भू–भागों पर स्थलाकृतियों की भौतिक बनावट का प्रभाव जनसंख्या घनत्व पर स्पष्ट पड़ता है।

ग्रामीण जनसंख्या प्रतिरूप– टिहरी गढ़वाल एक कृषि प्रधान जिला है। जिस कारण यहां की जनसंख्या ग्रामीण है। वर्ष 2011 में भारत (68.64 प्रतिशत) जनसंख्या ग्रामीण थी जबकि इसी वर्ष उत्तराखण्ड की ग्रामीण जनसंख्या 78.73 थी। वर्तमान में टिहरी गढ़वाल की 88.66 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है। जो देश और प्रदेश की तुलना में अधिक है।

तालिका 5 से स्पष्ट है कि टिहरी गढ़वाल की ग्रामीण जनसंख्या भी 1901 से 1941 तक 100 प्रतिशत रही है जबकि 1951–2011 के मध्य दशकीय वृद्धि में विभिन्नता रही है।

1941–1951 में ग्रामीण जनसंख्या 97.6 प्रतिशत

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

थी, जो 1951–1961 के दशक में बढ़कर 97.8 प्रतिशत हो गयी। वर्ष 1961 वर्ष 1971, वर्ष 1981 तथा वर्ष 1991 वर्ष 2001 वर्ष 2011 के दशक में ग्रामीण जनसंख्या में लगातार कमी रही है। 2011 में टिहरी गढ़वाल के सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या विकास खण्ड भिलंगना (17.74 प्रतिशत) में रही जबकि सबसे कम थौलधार विकासखण्ड में 7.02 प्रतिशत है। इस प्रकार 2011 के जनसंख्या आंकड़ों के आधार पर नरेन्द्रनगर 15.91 प्रतिशत, चम्बा 13.45 प्रतिशत प्रतापनगर 10.11 प्रतिशत जौनपुर 11.67 प्रतिशत देवप्रयाग 8.71 प्रतिशत कीर्तिनगर 7.66 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि रही है। जनपद के ये विकासखण्ड सुदुर क्षेत्र हैं यहां पर आधुनिक सुविधाओं न होने के कारण लोग आज भी पुरातन कृषि, पशुपालन (भेड़, बकरी, भैंसें) कर रहे हैं।

नगरीय जनसंख्या – टिहरी गढ़वाल की नगरीय जनसंख्या वर्ष 1951 में 2.3 प्रतिशत थी जबकि उत्तराखण्ड की 11.58 प्रतिशत थी वर्ष 1961 में जनपद टिहरी गढ़वाल (2.1 प्रतिशत) में 2 प्रतिशत की कमी रही 1971 के दशक में यह बढ़ोत्तरी 2.6 प्रतिशत हो गयी। इसके पश्चात 1981 से 2011 के दशक में नगरीय जनसंख्या में क्रमशः वृद्धि (4. 1 प्रतिशत) (6.3 प्रतिशत) (9.8 प्रतिशत) (11.3 प्रतिशत) की बढ़ोत्तरी रही है।

5–टिहरी गढ़वाल में ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या

क्र.स.	वर्ष	ग्रामीण जनसंख्या (प्रति सत में)	नगरीय जनसंख्या प्रति सत में)
1.	1901	100	–
2.	1911	100	–
3.	1921	100	–
4.	1931	100	–
5.	1941	100	–
6.	1951	97.6	2.3
7.	1961	97.8	2.1
8.	1971	97.3	2.6
9.	1981	95.8	4.1
10.	1991	93.6	6.3
11.	2001	90.1	9.8
12.	2011	88.6	11.3

इस प्रकार नगरीय जनसंख्या में मन्द गति से वृद्धि की प्रवृत्तियां रही है। वर्श 2011 में जनपद में मात्र 07 नगरीय केन्द्र है जो टिहरी, नरेन्द्रनगर, देवप्रयाग तहसीलों में केन्द्रित हैं।

नगरीय केन्द्रों के क्षेत्रीय वितरण से स्पष्ट है कि इसमें एकरूपता नहीं मिलती है वर्ष 2011 में जनपद के दक्षिणी उत्तरी एवं पूर्वी भाग नई टिहरी, चम्बा नरेन्द्रनगर, मुनि की रेती, देवप्रयाग, कीर्तिनगर, ढालवाला नगरीय केन्द्र स्थित है, जिनका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 77 वर्ग किमी और जनसंख्या 70139 व्यक्ति है। सबसे कम नगरीय जनसंख्या कीर्तिनगर 1517 व्यक्ति है जबकि साक्षरता का 81.25 प्रतिशत है अधिक जनसंख्या वाला नगर नई टिहरी है जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 31 वर्ग किमी एवं साक्षरता जनसंख्या का प्रतिशत (90.55) है।

6–जनपद टिहरी गढ़वाल में नगरीय जनसंख्या कस विवरण 2011

क्र.स.	नगर का नाम	तहसील का नाम	भौगोलिक क्षेत्र (वर्ग किमी0)	जनसंख्या
1.	नई टिहरी	टिहरी	31	24014
2.	चम्बा	टिहरी	8	7771
3.	नरेन्द्रनगर	नरेन्द्र नगर	10	6049
4.	मुनि की रेती	नरेन्द्र नगर	5	10620
5.	ढालवाला	नरेन्द्र नगर	16	18016
6.	देवप्रयाग	देवप्रयाग	5	2152
7.	कीर्तिनगर	देवप्रयाग	2	1517
	योग	–	77	70139

निष्कर्ष– टिहरी गढ़वाल एक ग्रामीण कृषि प्रधान जिला है अतः ग्रामीण लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठाये बिना प्रदेश और राष्ट्र का विकास होना सम्भव है। इस जिले में जनसंख्या का पलायन मैदानी भागों तथा पर्वतीय टाऊनसिप नई टिहरी, चम्बा, घनशाली, मुनि की रेती, ढालवाला, कीर्तिनगर, गजा क्षेत्रों में हो रही है। जिस कारण इसका सीधा प्रभाव कृषि भूमि, प्रति व्यक्ति भूमि पर पड़ रहा है। साथ ही जनसख्या वृद्धि से शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी, पानी, की समस्याओं से सामना करना पड़ सकता है। जबकि नगरीय भागों में आवासीय सुविधाओं में कमी हो सकती है। जनसंख्या से इन क्षेत्रों में गन्दी बस्तियों में बढोत्तरी होगी और समाज में अनाचार, दुराचार, चोरी, डकैती घटनाओं में वृद्धि होती जायेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Beghel, kriran (1984) : जनांकिकी और भारत में जनसंख्या, पुष्पराज प्रकाशन इलाहाबाद।
2. Chandma, R.C. (1986) : Population Geography, Kalyani, New Delhi
3. Clarke, J (1972) : Population Geography, oxford.
4. Panda B.P. (1991) : जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
5. Tripathi, R.D. (2005) : जनसंख्या भूगोल, राधा पब्लिकेशन।
6. हीरालाल (2000) जनसंख्या भूगोल, राधा पब्लिकेशन।
7. जिला सांख्यिकी पत्रिका, नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*